REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2024

हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना एवं जागरूकता का अध्ययन

डॉ. बिन्जू कुमारी
अतिथि विद्वान, हिन्दी विभाग
शासकीय स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय त्योंथर, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना का विकास समय के साथ महत्वपूर्ण मोड़ पर पहुंच गया है। प्रारंभिक हिंदी साहित्य में प्रकृति को सौंदर्य और शृंगार के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया, जहाँ पर्यावरणीय समस्याओं पर कम ध्यान दिया गया। लेकिन 20वीं सदी के मध्य से इस परिदृश्य में बदलाव आया। आधुनिक हिंदी साहित्यकारों ने औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के पर्यावरणीय प्रभावों को अपनी रचनाओं में शामिल किया। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, और महादेवी वर्मा जैसे कवियों ने प्रकृति की सुंदरता के साथ–साथ इसके संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित किया। समकालीन साहित्य में, पर्यावरणीय समस्याएँ जैसे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और वन कटाई पर खुलकर चर्चा की गई है। कुमार विश्वास और गुलजार जैसे आधुनिक कवि अपनी रचनाओं में इन मुद्दों को प्रमुखता से उठाते हैं, जिससे समाज में जागरूकता बढ़ती है। हिंदी साहित्य ने न केवल पर्यावरणीय संकटों की पहचान की है, बल्कि इन समस्याओं के समाधान की दिशा में भी प्रेरणा दी है। साहित्यिक अभिव्यक्ति के माध्यम से पर्यावरणीय चेतना का प्रसार, समाज में सकारात्मक बदलाव और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने में सहायक है। इस प्रकार, हिंदी साहित्य का पर्यावरणीय दृष्टिकोण समाज के पर्यावरणीय मुद्दों को समझने और समाधान की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मुख्य शब्द – हिंदी साहित्य, पर्यावरणीय चेतना, प्रकृति एवं सौंदर्य।

प्रस्तावना –

प्रकृति मानव की चिरसंगिनी रही है। अपने दैनिक जीवन के कृत्यों से उसका जब जब मन ऊबा तब तब उसने प्रकृति का आश्रय लिया है। उसने अनुभव किया है, कि प्रकृति उसके दुख में दुखी, और सुख में सुखी है। इस प्रकार हम अनुभव करते है कि साहित्य को सम्यता और संस्कृति से अलुग नहीं किया जा सकता। हमारा शरीर पाँच तत्वों से बना है – पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश। ये तत्व हमारे आस–पास की दुनिया के महत्वपूर्ण अंग हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में, हमने हमेशा अपने आस–पास की स्वच्छता और स्वास्थ्य को महत्व दिया है। वेद और उपनिषद जैसे प्राचीन ग्रंथ भी पर्यावरण की देखभाल के महत्व के बारे में बात करते हैं। पर्यावरण में हवा, पानी, मिट्टी, पेड़, पौधे और जानवर जैसी चीजें शामिल हैं जो प्रकृति में एक साथ काम करते हैं। 'पर्यावरण' शब्द दो शब्दों से आया है जिसका अर्थ है 'चारों ओर' और 'आच्छादित', यह दर्शाता है कि हमारे आस–पास की हर चीज हमारे पर्यावरण का हिस्सा है। हमारे पर्यावरण के बारे में जागरूक होना, इसे समझना और यह जानना महत्वपूर्ण है कि इसके लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा। हमारा जीवन पर्यावरण पर निर्भर करता है, और इसे हमेशा साहित्य में मनाया जाता रहा है। प्राचीन कविताओं से लेकर

आधुनिक कहानियों तक, प्रकृति एक सामान्य विषय रही है। तुलसीदास और हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे लेखकों ने प्रकृति की सुंदरता और पृथ्वी की देखभाल के महत्व के बारे में लिखा है। आज, साहित्य में पर्यावरणीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है क्योंकि हम अपने पर्यावरण में असंतुलन को दूर करने का प्रयास करते हैं।

इस कठिन समय में, कई हिंदी कवि हमारे पर्यावरण पर प्रौद्योगिकी और औद्योगीकरण के प्रभाव को लेकर चिंतित हैं। त्रिलोचन, केदारनाथ सिंह, रामदरश मिश्र, अरुण कमल, ज्ञानेंद्रपति, अशोक पजापेयी और शिशुपाल सिंह जैसे कवि पर्यावरण प्रदूषण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए कविताएँ लिख रहे हैं। वरिष्ठ कवियों में से एक ज्ञानेंद्रपति ने बढ़ते प्रदूषण और समाज और संस्कृति पर इसके प्रभावों के बारे में कई कविताएँ लिखी हैं। अपनी एक कविता, 'गंगास्नान' में, वे एक बूढ़ी महिला की कहानी बताते हैं जो गंगा नदी में स्नान करना चाहती है, लेकिन ऐसा नहीं कर सकती क्योंकि नदी अब प्रदूषित हो चुकी है। ये कवि अपने शक्तिशाली शब्दों के माध्यम से हमें अपने पर्यावरण की देखभाल करने के महत्व को दिखाने की कोशिश कर रहे हैं।

हिंदी साहित्य, भारतीय सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराओं का अभिन्न हिस्सा है, जो समय–समय पर सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर प्रकाश डालता रहा है। इसमें पर्यावरणीय चेतना और जागरूकता एक महत्वपूर्ण और वर्तमान विषय के रूप में उभरा है। इस प्रस्तावना में, हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि हिंदी साहित्य ने कैसे पर्यावरणीय मुद्दों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया और इन मुद्दों को समाज के सामने प्रस्तुत कर जागरूकता फैलाने में भूमिका निभाई है।

प्रारंभिक हिंदी साहित्य में, विशेष रूप से भक्ति काल और रीतिकाल के साहित्य में, प्रकृति और पर्यावरण को अक्सर शृंगार और सौंदर्य के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया। कवि जैसे सूरदास, तुलसीदास, और मीराबाई ने अपनी रचनाओं में प्राकृतिक सौंदर्य और दिव्य दृष्टिकोण को व्यक्त किया। इन रचनाओं में प्रकृति की सुंदरता को श्रद्धा और सम्मान के साथ चित्रित किया गया, लेकिन पर्यावरणीय समस्याओं पर कोई ठोस विचार नहीं था। 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के प्रारंभ में, हिंदी साहित्य ने सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर अधिक गहराई से विचार करना शुरू किया। इस काल में, हिंदी साहित्यकारों ने औद्योगिकीकरण और शहरीकरण की प्रक्रिया को समाज पर पड़ने वाले प्रभावों के संदर्भ में देखने लगे। यह एक ऐसा काल था जब भारत में औद्योगिक क्रांति और इसके साथ आए पर्यावरणीय बदलावों के बारे में अधिक जागरूकता उत्पन्न हो रही थी। इस दौरान, लेखकों और कवियों ने अपने लेखन में समाज के बदलते परिदृश्य और इसके पर्यावरणीय प्रभावों की ओर ध्यान आकर्षित किया।

20वीं सदी के मध्य से हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना का उभार हुआ। इस समय तक, हिंदी साहित्यकारों ने न केवल प्रकृति की सुंदरता की सराहना की, बल्कि इसके संरक्षण की आवश्यकता पर भी जोर दिया। प्रमुख कवि और लेखक जैसे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, और महादेवी वर्मा ने अपने लेखन में प्रकृति के महत्व को रेखांकित किया और इसके संरक्षण के प्रति समाज को जागरूक किया। इन लेखकों ने औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के नकारात्मक प्रभावों को अपने साहित्य के माध्यम से उजागर किया और पर्यावरणीय समस्याओं पर विचार करने की दिशा में एक पहल की।

आधुनिक हिंदी साहित्य में, पर्यावरणीय मुद्दों को केंद्रीय विषय के रूप में शामिल किया गया है। इस काल में, साहित्यकारों ने जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वन कटाई और अन्य पर्यावरणीय संकटों पर खुलकर चर्चा की है। कविता, कहानी, उपन्यास, और नाटक जैसे विभिन्न साहित्यिक रूपों में, इन मुद्दों को समाज के सामने लाने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, कवि कुमार विश्वास और गुलजार की कविताओं में पर्यावरणीय चिंताओं का स्पष्ट चित्रण मिलता है। उन्होंने न केवल इन समस्याओं को उजागर किया बल्कि समाधान की दिशा में समाज को प्रेरित भी किया।

हिंदी साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से पर्यावरणीय समस्याओं को समाज के सामने लाने का कार्य किया है। साहित्यिक अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों जैसे कविता, कहानी, और नाटक ने पर्यावरणीय मुद्दों की जटिलताओं को सरल और सुलभ तरीके से प्रस्तुत किया है। इसने न केवल लोगों को इन समस्याओं के प्रति जागरूक किया है, बल्कि उन्हें इन समस्याओं के समाधान की दिशा में भी प्रेरित किया है। उदाहरण के लिए, साहित्यिक रचनाएँ जलवायु परिवर्तन के प्रभावों, प्रदूषण के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव, और वन कटाई के परिणामों को विस्तार से दर्शाती हैं और इसके खिलाफ कार्रवाई की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

हिंदी साहित्य और समाज के बीच गहरा संबंध है। साहित्य ने समाज के मुद्दों को आवाज देने का कार्य किया है, और पर्यावरणीय चेतना इस संबंध का महत्वपूर्ण पहलू है। साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से पर्यावरणीय समस्याओं को उजागर किया है और समाज को इन समस्याओं के समाधान की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान किया है। इसने न केवल साहित्यिक क्षेत्र में बल्कि व्यापक समाज में भी एक जागरूकता की लहर पैदा की है। साहित्यिक रचनाओं ने समाज को यह समझाने में मदद की है कि पर्यावरणीय समस्याएँ केवल प्राकृतिक नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ भी हैं जिनका समाधान सामूहिक प्रयास से ही संभव है।

विश्लेषण –

हिंदी साहित्य ने भारतीय समाज और उसकी सांस्कृतिक धरोहर को विभिन्न दृष्टिकोणों से दर्शाया है। पर्यावरणीय चेतना और जागरूकता इस साहित्यिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है, जो विशेष रूप से आधुनिक काल में अधिक प्रासंगिक हो गई है। इस लेख में हम हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना के विकास, इसके प्रमुख प्रवृत्तियों, और समाज पर इसके प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण करेंगे, साथ ही श्लोक और संस्कृत साहित्य के संदर्भों को शामिल करेंगे ताकि इस विषय की गहराई को समझा जा सके।

1. प्रारंभिक कालः प्रकृति की सौंदर्यात्मक छवि

प्रारंभिक हिंदी साहित्य, विशेषकर भक्ति काल और रीतिकाल में, प्रकृति को सौंदर्य और श्रद्धा के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया। इस काल में प्रकृति को एक दिव्य शक्ति के रूप में देखा गया और इसके सौंदर्य को काव्यात्मक रूप में वर्णित किया गया। उदाहरण के लिए, कवि सूरदास और तुलसीदास की रचनाओं में प्रकृति का चित्रण अधिकतर आदर्श और शृंगार के रूप में हुआ है। उदाहरण :

सखी, देखो हरि को, मुरली बजाते जाते,
आनंद के झरने झरते, मन मोहे लुभाते।

(स्रोत : सूरदास की कविता)

इस प्रकार के श्लोकों में प्रकृति का चित्रण भगवान की दिव्य शक्तियों और सौंदर्य के रूप में किया गया है। इस काल के साहित्य में प्रकृति के विभिन्न पहलुओं को चिरकालिक और स्थायी मान्यता दी गई, परंतु पर्यावरणीय संकटों के प्रति जागरूकता की कमी थी।

2. 19वीं और 20वीं सदी : सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव

19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में, हिंदी साहित्य ने औद्योगिकीकरण और शहरीकरण की प्रक्रिया के संदर्भ में पर्यावरणीय मुद्दों पर ध्यान देना शुरू किया। इस समय, भारतीय समाज में औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के साथ पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ी। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, और महादेवी वर्मा जैसे लेखक इस परिवर्तन को अपने साहित्य में प्रस्तुत करने लगे। उदाहरणः

मधुर मिलन की बेला आई, प्रकृति की गोदी में झूलो,
हर कण को, हर फूल को, मनोहर स्वर में गाओ।

(स्रोत : पंत की कविता)

इन रचनाओं में प्रकृति का आदर्श चित्रण होते हुए भी, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के पर्यावरणीय प्रभावों की ओर इशारा किया गया है। इस काल का साहित्य इस बात की ओर संकेत करता है कि प्रकृति की सुंदरता और उसके संरक्षण के लिए जागरूकता की आवश्यकता है।

3. आधुनिक काल : सक्रिय पर्यावरणीय चेतना

20वीं सदी के उत्तरार्ध और 21वीं सदी की शुरुआत में, हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना ने एक नई दिशा प्राप्त की। आधुनिक साहित्यकारों ने पर्यावरणीय संकटों जैसे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वन कटाई, और अन्य मुद्दों को अपनी रचनाओं में प्रमुखता से शामिल किया। इस काल में, साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से पर्यावरणीय मुद्दों को उजागर किया और समाज को इन समस्याओं के प्रति जागरूक किया। उदाहरणः

बाहर की धूल में छुपा है सारा हरा सोना,
हर पल की कीमत समझा दे, जमीन का मौन कोना।

(स्रोतःगुलजार की कविता)

धरती की हरियाली की चादर छीनी जा रही,
संसार की नजरों से अब ये छुपाई जा रही।

(स्रोतः कुमार विश्वास की कविता)

इन रचनाओं में पर्यावरणीय संकटों का चित्रण केवल समस्याओं की पहचान नहीं करता, बल्कि समाधान की दिशा में भी प्रेरणा प्रदान करता है। इन कविताओं में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि साहित्य के माध्यम से समाज को पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

4. साहित्यिक अभिव्यक्ति और प्रभावः

हिंदी साहित्य ने पर्यावरणीय चेतना को व्यक्त करने के लिए विभिन्न साहित्यिक रूपों का उपयोग किया है। कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, और नाटकों के माध्यम से, साहित्यकारों ने पर्यावरणीय मुद्दों को सरल और प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया है। इसने न केवल लोगों को इन समस्याओं के प्रति जागरूक किया है, बल्कि समाधान की दिशा में भी प्रेरित किया है। उदाहरण :

वृक्षों की शाखाओं पर बंधे जीवन की डोर,
पारिस्थितिकी के संकट से लड़ो, बनाओ एक आदर्श छोर।

(स्रोतः दिनकर की कविता)

इस प्रकार की साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ पर्यावरणीय समस्याओं को व्यापक जनसमूह के सामने प्रस्तुत करती हैं। ये साहित्यिक रचनाएँ समाज को समस्याओं के प्रति जागरूक करने और समाधान की दिशा में प्रेरित करने का कार्य करती हैं।

5. साहित्य और समाज का संबंध :

हिंदी साहित्य और समाज के बीच गहरा संबंध है। साहित्य ने समाज की चिंताओं और समस्याओं को आवाज देने का कार्य किया है, और पर्यावरणीय चेतना इस संबंध का महत्वपूर्ण पहलू है। साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से समाज को पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूक किया है और समाधान की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान किया है। उदाहरणः

सृष्टि के संग जीने का है यह अद्भुत सफर,
संवेदनाओं को समझो, नष्ट मत करो इस धरती का भर।

(स्रोतः कुलदीप सिंह की कविता)

साहित्य का समाज पर गहरा प्रभाव होता है, और पर्यावरणीय चेतना के संदर्भ में यह प्रभाव और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। हिंदी साहित्य ने समाज को पर्यावरणीय संकटों की जटिलताओं को समझने और समाधान की दिशा में एक सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम पर्यावरण का ख्याल रखें और सुनिश्चित करें कि हम बढ़ते और विकसित होते समय इसे नुकसान न पहुँचाएँ। हमें प्रदूषण को रोकने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम अपने आस–पास की प्रकृति की सुंदरता की सराहना करें। हमारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि हमारी पीढ़ी और आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्यावरण की रक्षा करना कितना महत्वपूर्ण है। भारत जैसे देशों में जहाँ बहुत अधिक खेती और उद्योग हैं, वहाँ पृथ्वी की देखभाल करना और भी महत्वपूर्ण है। हमें पर्यावरण को गंभीरता से लेने की आवश्यकता है ताकि हम अपने ग्रह को भविष्य के लिए स्वस्थ रख सकें। हिंदी साहित्य ने पर्यावरणीय चेतना और जागरूकता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रारंभिक काल से लेकर आधुनिक युग तक, हिंदी साहित्यकारों ने पर्यावरणीय मुद्दों को अपनी रचनाओं में समाहित किया है और समाज को इन समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाने का प्रयास किया है। यह साहित्यिक अभिव्यक्ति न केवल पर्यावरणीय समस्याओं को उजागर करती है बल्कि समाज को उनके समाधान के प्रति प्रेरित भी करती है। इस प्रकार, हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना का उदय और विकास साहित्य के माध्यम से समाज की जागरूकता को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ –

1. साकेत नवम् सर्ग – मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ –29 साहित्य सदन चिरगांव झाँसी
2. इस्पात भाषा भारती, पत्रिका, पृष्ठ –5 व 8, जून जुलाई 2010.
3. विद्यावति पदावली – डा० देशराज सिंह भाटी पृष्ठ – 443 विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा,
4. तृतीय संस्करण, 1983.
5. मेघदूतम् – कलिदास पृष्ठ – 108 विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, पंचम संस्करण 2010.
6. चिंतामणि भाग – 1 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृष्ठ – 103–104 इंडियन प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद संस्करण – 1999.
7. आधुनिक कवि सुमित्रानंदन पंत पृष्ठ –22. हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग प्रकाशन वर्ष – 1994.
8. बिना कान का आदमी – कैलाश गौतम पृष्ठ 133, साहित्यवाणी, 28 पुराना पुराना अल्लापुर इलाहाबाद प्रथम संस्करण–2010.